Patrika (Indore), 13th December 2025, Page - 02

#IITINdore

उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक में आइआइटी इंदौर ने बताई उपलब्धियां

100 करोड़ की सक्षम परियोजना से डीएवीवी में बना एसआइसी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. देश में उभरते विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों की क्षमता बढ़ाने के लिए चल रही 100 करोड़ की सक्षम परियोजना अब परिणाम देने लगी है। आइआइटी इंदौर में शुक्रवार को हुई उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक में भारत सरकार के अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएमआरएफ) के सीईओ डॉ. शिवकुमार कल्याणारामन ने इन प्रगति कार्यों को करीब से देखा और सराहा।

सक्षम परियोजना के तहत आइआइटी इंदौर 'हब' के रूप में देश के 6 प्रमुख संस्थानों बुंदेलखंड विश्वविद्यालय (झांसी), देवी

अहिल्या विश्वविद्यालय (इंदौर), आइआइआइटी भोपाल, एनआईटी कुरुक्षेत्र, आरटीएम नागपुर विश्वविद्यालय और विक्रम विश्वविद्यालय (उज्जैन) को मेंटर कर रहा है। सभी संस्थानों के कुलपति व शोध प्रमुख बैठक में मौजूद रहे। इसका लक्ष्य इन संस्थानों में शोध, प्रयोगशालाएं और आधुनिक तकनीक की क्षमता बढ़ाना है। परियोजना पर्यावरणीय सततता, उन्नत सामग्री विज्ञान और स्वास्थ्य व चिकित्सा प्रौद्योगिकी, इन तीन प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित है यानी शोध सीधे उन क्षेत्रों में हो रहा है, जिनकी जरूरत देश को सबसे ज्यादा है।

मिलेंगी उच्च स्तर सुविधाएं

बैठक का प्रमुख आकर्षण देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में हाल ही में शुरू हुआ सोफेस्टिकेटेड इंस्ट्रूमेंटेशन सेंटर (एसआइसी) रहा। यह अत्याधुनिक लैब सक्षम परियोजना की वजह से संभव हुई है। इससे मध्यप्रदेश और आसपास के राज्यों के शोधकर्ताओं को उच्च स्तर की वैज्ञानिक जांच और टेस्टिंग सुविधाएं मिल सकेंगी। आइआइटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने कहा, यह परियोजना देश में शोध का ढांचा बदलने का काम कर रही है। यह सहयोग की ताकत दिखाती है। एसआइसी जैसी सुविधाएं बताती हैं कि साथ मिलकर काम करने से वैज्ञानिक प्रगति कितनी तेज हो सकती है।

परियोजना की प्रशंसा

डॉ. शिवकुमार कल्याणारामन ने परियोजना की शैली की प्रशंसा करते हुए कहा कि 6 विश्वविद्यालयों को मेंटर करने का आइआइटी इंदौर का मॉडल देशभर में लागू किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यह परियोजना रिसर्च इकोसिस्टम को बदलने की क्षमता रखती है। आइआइटी इंदौर के आर एंड डी डीन प्रो. अभिरूप दत्ता ने कहा कि सक्षम ने विश्वविद्यालयों को आपस में जोड़कर शोध को तेज गति दी है। यह सामूहिक मॉडल अलग-अलग प्रयासों से ज्यादा असरदार है।